https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 01, No 05, PP 75-80 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly
Verma et al. — Bagru Print

Bagru Print: Cultural Heritage and Innovation in Contemporary Indian Apparel (बगरू छपाई: सांस्कृतिक विरासत और समकालीन भारतीय परिधान में नवाचार)

Jyoti Verma [a]*

[a] *Research Scholar, Department of Fine Arts, Chhatrapati Shahuji Maharaj University, Kanpur*
[a]*Email: jyotiverma9316@gmail.com*

Abstract

Bagru printing, a traditional hand-printing technique from Rajasthan, is a rich cultural heritage of Indian textile art. This art not only showcases aesthetic beauty through natural dyes, hand-carved wooden blocks, and traditional motifs, but it also keeps the handicraft tradition alive for generations. Currently, in the field of textile design, Bagru printing has opened new avenues for innovation. Modern designers are presenting this traditional technique on a global stage by incorporating new color combinations, fusion patterns, and sustainable fashion concepts. This analysis explores the historical background, technical process, and cultural significance of Bagru printing, while also demonstrating how innovations in this traditional art are establishing a new identity in contemporary Indian apparel. This study highlights how the traditional Bagru print is enabling the Chhipa community economically, and how it is gaining worldwide fame through fashion brands.

बगरू छपाई राजस्थान की पारंपरिक हस्तछपाई तकनीक, भारतीय वस्त्रकला की एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यह कला प्राकृतिक रंगों, हाथ से तराशे लकड़ी के ब्लॉकों और पारम्परिक रूपांकनों के माध्यम से न केवल सौंदर्यबोध को दर्शाती है, बल्कि यह पीढ़ियों से हस्तशिल्प की परंपरा को भी जीवित रखती है। वर्तमान में वस्त्र डिजाइन के क्षेत्र में बगरू छपाई ने नवाचार के नए द्वार खोल हैं। आधुनिक डिजाइनरों के द्वारा पारंपरिक तकनीक के साथ नए रंग संयोजन, फ्यूजन पैटर्न और स्थाई फैशन की अवधारणाओं का समावेश कर इसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया जा रहा है। बगरू छपाई की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, तकनीकी प्रक्रिया और इसकी सांस्कृतिक महत्ता का विश्लेषण करता है, साथ ही यह भी दर्शाता है कि कैसे इस पारंपरिक कला में नवाचारों के माध्यम से समकालीन भारतीय परिधानों में एक नवीन पहचान स्थापित हो रही है। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे पारंपरिक बगरू छपाई के द्वारा छीपा समुदाय आर्थिक रूप से सक्षम हो रहा है, और इसे फैशन ब्रांड्स के जरिए कैसे विश्व स्तर पर प्रसिद्धि मिल रही है।

Keywords: Bagru print, Chhipa, apparel, design, handicraft.

Received: 8/5/2025
Published: 8/31/2025
----
* Corresponding author.

छपाई की प्रक्रिया सर्वप्रथम कागज पर की गई। समय के साथ यह कागज से धीरे धीरे वस्त्रों पर भी की जाने लगी। वस्त्रों पर छपाई का काम सैकड़ों वर्षों से किया जा रहा है, तथा भारत के कुछ राज्यों में आज भी इस छपाई प्रक्रिया को विकसित और संरक्षित किया गया है। इसके साथ भारतीय परिधान भी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये हमारी कला, संस्कृति, परंपरा और विरासत को भी दर्शाते हैं। परिधान के रंग और डिजाइन

सांस्कृतिक महत्व रखते हैं, और हमारी परम्परा के अत्यधिक नजदीक होते हैं। वर्तमान में पारंपरिक वस्त्रों में आधुनिकता और परम्परा का सुन्दर सामंजस्य देखा जा सकता है। भारतीय परिधान की सुंदरता बढ़ाने में बगरू छपाई भी कई हस्तशिल्प कलाओं में से एक है। यह राजस्थान की एक पारंपरिक छपाई प्रक्रिया है, जो आज भी भारतीय वस्त्रों की शोभा बढ़ा रही है। बगरू जो कि राजस्थान राज्य की राजधानी, जयपुर शहर से लगभग 32 किलोमीटर दूर स्थित एक गांव है, जहां छपाई के इतिहास को समेटे छीपा समुदाय वर्तमान में भी इस हस्त कला में पीढ़ियों से कुशल हैं। राजस्थान के कई क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार की छपाई वस्त्रों पर की जाती है, जिसका अपना एक अलग महत्व है। उनमें से बगरू गांव में की जाने वाली बगरू छपाई भी प्रमुख है। बगरू छपाई की परंपरा लगभग 300 वर्षों से भी अधिक प्राचीन है। यह राजस्थान की परंपरा, सांस्कृतिक विरासत और नवाचार में निहित भारतीय परिधान को प्रदर्शित करती है। बगरू छपाई मुख्य रूप से ब्लॉक प्रिंटिंग तकनीक पर आधारित है, जिसमें लकड़ी के ब्लॉक की सहायता से डिजाइन या पैटर्न को वस्त्रों पर छापा जाता है। बगरू छपाई एक उत्कृष्ट शिल्प कौशल है। छपाई की प्रक्रिया में कई तरह के हैंड ब्लॉक की जरूरत होती है। विभिन्न प्रकार के ब्लॉक रंगों के परिवर्तन और पैटर्न पर निर्भर करते हैं। लकड़ी के ब्लॉक प्रायः शीशम या रोहिड़ा की लकड़ी से तराशे जाते हैं। इन ब्लॉक की बनावट और गुणवत्ता छपाई के अनुकूल होती है। छपाई के लिए प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है, जो पर्यावरण के अनुकूल होते हैं।

भारतीय परिधान में छपाई का महत्व

भारत अपने समृद्ध वस्त्र परंपरा और हस्तशिल्प के लिए विश्व प्रसिद्ध है। भारतीय परिधान जैसे- साड़ी, सलवार कुर्ता, लंहगा, धोती आदि को सुन्दर और आकर्षक बनाने के लिए कई तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिनमें से एक तकनीक है छपाई। यह न केवल कपड़ों को सजाती है, बल्कि क्षेत्रीय पहचान और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है। इन परिधानों की सुंदरता को बढ़ाने के लिए छपाई का विशेष महत्व है। छपाई के माध्यम से वस्त्र केवल एक परिधान नहीं, बल्कि कला का माध्यम बन जाते हैं। भारत के अलग-अलग राज्यों में विभिन्न प्रकार के पहनावे का चलन है। पहनावे में भिन्नता होने के कारण अलग-अलग प्रकार के वस्त्रों का चलन है। इन परिधानों को अधिक सुन्दर और आकर्षक बनाने के लिए कई तरह के डिजाइन, कढ़ाई और अलग-अलग पैटर्न के साथ इन पर छपाई का काम किया जाता है, जिससे ये वस्त्र रंगीन डिजाइन के साथ पहनावे को आकर्षक बनाते हैं। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अलग पहचान होती है, जिसमें परिधान एक अहम भूमिका निभाते हैं। किसी भी व्यक्ति के पहनावे को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि वह किस क्षेत्र का निवासी होगा। यदि वस्त्रों पर छपाई की बात आती है तो छपाई की भी किसी क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग शैलियां विकसित हुई हैं। राजस्थान में कई तरह की छपाई की विधियां प्रचलित हैं, जैसे- सांगानेर की सांगानेरी छपाई, बगरू की बगरू छपाई, बालोतरा की अजरख और चितौड़गढ़ की दाबू छपाई ।

बगरू छपाई की उत्पत्ति और सांस्कृतिक महत्व

बगरू छपाई का काम छीपा समुदाय करता है। वर्षों पुरानी इस परंपरा को आगे बढ़ाने का श्रेय इसी समुदाय को जाता है। यह समुदाय मूलतः महाराष्ट्र से है। छीपा समुदाय स्वयं को संत नामदेव को अपना पूर्वज बताते हैं। छीपा समुदाय जयपुर में संजारिया नदी के किनारे बस गए और उस जगह को बगरू के नाम से जाना गया। उन्होंने स्वयं को जगह के अनुरूप ढाल लिया और स्वयं के द्वारा तैयार किए गए अलग-अलग पैटर्न और डिजाइन के वस्त्र तैयार करने लगे। उनकी इस कला को प्रसिद्धि तब मिली, जब शाही परिवार का संरक्षण उन्हें प्राप्त हुआ। बगरू छपाई राजस्थान की एक पारम्परिक कला है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। यह एक अद्वितीय हस्त कला है, जो प्राकृतिक रंगों और लकड़ी के ब्लॉक द्वारा वस्त्रों पर हाथ से की गई छपाई के लिए जानी जाती

है। यह राजस्थान की एक सांस्कृतिक विरासत के रूप में विकसित और संरक्षित की जा रही है। राजस्थान राज्य विविधताओं को समाहित किए है। यही विविधता यहां की हस्तकलाओं में भी देखने को मिलती हैं। यहां के प्रत्येक क्षेत्र में कलाकार बसते हैं। जैसे- मीनाकारी, नक्काशी, मूर्तिकला, चित्रकला, कशीदाकारी, थेवा कला और हाथ की छपाई आदि ऐसी अनेक कलाएं राजस्थान में प्रचलित हैं। हाथ की छपाई के अंतर्गत सांगानेर, बगरू, बालोतरा, बाड़मेर, चितौड़गढ़ क्षेत्र अधिक प्रचलित हैं। यहां की छपाई में विभिन्न प्रकार के डिजाइन और पैटर्न का प्रयोग किये जाते है। जिसके लिए प्राकृतिक रंग इस्तेमाल किए जाते हैं। राजस्थान की संस्कृति की कुछ अपनी विशेषताएं हैं, जो इसे अन्य राज्यों से पृथक बनाता है। छपाई यहां की अनुकूल प्राकृतिक परिस्थितियों से प्रभावित है। शायद इसीलिए राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में छपाई का प्रचलन अधिक है। पारंपरिकता को अपने अंदर समाहित किए होने के कारण छपाई का सांस्कृतिक महत्व है, और इसे राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत कहना उचित होगा।

पारंपरिक बगरू छपाई

बगरू छपाई में अलंकारिक डिजाइन के अतिरिक्त ज्यामितीय पैटर्न अधिक होते हैं। बगरू छपाई में दो तरह की छपाई का प्रयोग किया जाता है। पहली काली सफेद रंग वाली बगरू प्रिंट और दूसरी विशेष प्रतिरोध तकनीक का इस्तेमाल करके की गई दाबू छपाई, जिसे मिट्टी की छपाई या मड प्रिंटिंग भी कहते हैं। दोनों प्रकार की छपाई की प्रक्रिया अलग-अलग होती है। पारंपरिक बगरू छपाई अनेक चरणों में की जाती है। पहले चरण में आर्टिजन कपड़े को रात भर पानी में भिगोकर रखते हैं, जिससे कपड़ों में लगे डस्ट और ऑयल निकल जाए। पानी में धोने के बाद कपड़े को हरदा पाउडर के मिश्रण में भिगोते हैं। 1 मीटर कपड़े के लिए 100 ग्राम हरदा पाउडर लिया जाता है। हरदा पाउडर में भिगोने से कपड़े का रंग हल्का पीला हो जाता है। हरदा का उपयोग कपड़े पर प्राकृतिक रंगों को कपड़े पर चिपकने और उसे स्थाई बनाए रखने के लिए किया जाता है। फिर कपड़े को तेज धूप में खुले आसमान के नीचे सुखाया जाता है। कपड़े का पीला रंग हल्के क्रीमी रंग में परिवर्तित हो जाता है, और यह बगरू छपाई के लिए तैयार किया जा चुका है।

बगरू छपाई में धूप और पानी दो आवश्यक तत्व हैं। इनके बिना इस छपाई का काम नहीं किया जा सकता है। इस छपाई के प्रत्येक चरण में कपड़े को पानी से धुलकर और धूप में सुखाया जाता है। बगरू की दो प्रकार की छपाई प्रक्रिया में पहली छपाई की प्रक्रिया सीधे ही लकड़ी के ब्लॉक के माध्यम से कपड़े पर की जाती है। प्रत्येक छपाई से पहले ब्लॉक्स को सरसों के तेल में लगभग 1 या दो दिन तक भिगोकर रखते हैं। उसके बाद ही इनसे छपाई का काम किया जाता है, ताकि ब्लॉक पर बने डिजाइन कपड़े पर अधिक निखर कर आए। पारम्परिक बगरू छपाई लाल और काले रंग में ही की जाती है। छपाई की पहली प्रक्रिया में रंग के घोल को एक ट्रे में रखा जाता है। आर्टिजन लकड़ी के ब्लॉक को रंग की ट्रे में डुबाते है, फिर उसे कपड़े पर रखकर दबाते हैं जब तक कि वह पैटर्न कपड़े पर न छप जाए। प्रत्येक पैटर्न के लिए ब्लॉक को रंग में डुबाकर फिर कपड़े पर छपाई की जाती है। पैटर्न की आउटलाइन के लिए अलग ब्लॉक तथा डिजाइन में रंग भरने के लिए अलग ब्लॉक्स का इस्तेमाल किया जाता है। बगरू छपाई की दूसरी प्रक्रिया, जिसे दाबू छपाई भी कहते हैं। इस प्रक्रिया में कपड़े पर काली मिट्टी को लगाकर रंगाई की जाती है। दाबू को सामान्यतः कई सामग्रियों का इस्तेमाल करके बनाया जाता है, जैसे - स्थानीय रूप से उपलब्ध काली मिट्टी, पानी में घुला चुना, प्राकृतिक गोंद और गेहूं का पाउडर। इन सभी सामग्री को आपस में अच्छे से मिलाकर एक गाढ़ा पेस्ट तैयार किया जाता है। इसे रात भर ऐसे ही छोड़ दिया जाता है। इसके बाद इसे पतले पेस्ट के रूप में छानते हैं, जिसका इस्तेमाल छपाई के लिए किया जाता है। कपड़े को मेज पर फैलाकर ब्लॉक की सहायता से डिजाइन को छापा जाता है। तैयार किये गए दाबू पेस्ट में ब्लॉक को डुबाकर कपड़े पर छपाई होती है। दाबू छपाई पूरी होने पर उसको पूरी तरह से सूखने से पहले कपड़े पर लकड़ी का बुरादा छिड़क देते हैं, जिससे डिजाइन एक दूसरे से न चिपके। इसके बाद छपाई के द्वारा बनाए गए डिजाइन के साथ ही कपड़े

को प्राकृतिक रंगों से रंगा जाता है, जिससे जहां पर दाबू छपाई की गई है उन हिस्सों पर रंग नहीं लगता, जिससे एक पैटर्न कपड़े पर नजर आता है। कपड़े पर छपाई करने के बाद उसको सादे पानी में कम से कम 10 से 15 मिनट धुला जाता है, जिससे अतिरिक्त रंग कपड़े से निकल जाए। थोड़ी देर पानी में छोड़कर फिर इसे सूखने देंगे। सूखने के बाद कपड़े को तांबे के बर्तन में गर्म पानी में लगभग 2 घंटे उबालते हैं, ताकि रंग पक्के हो जाए।

प्राकृतिक रंग

बगरू छपाई का प्रत्येक रंग प्राकृतिक स्रोत से आर्टिजन द्वारा तैयार किया जाता है। यह पर्यावरण के अनुकूल और इससे त्वचा को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचता है। बगरू छपाई मुख्यतया काले और लाल रंग में की जाती है। बगरू की बोलचाल की भाषा में लाल रंग को 'बेगर' या 'बेगन' और काले रंग को 'स्याही' कहते हैं। फिटकरी, गोंद, अलिजरीन, गेरू का पेस्ट बनाकर इसमें घी और तेल मिलाया जाता है। इसे लाल या बेगन रंग कहते हैं। काला या स्याही लोहा, गुड़, गोंद और इमली के आटे के स्टार्च से किण्वन द्वारा बनाया जाता है। इस पेस्ट को हरदा पाउडर में भिगोए गए कपड़े पर लगाने से जब यह हवा के संपर्क में आता है, तो काला हो जाता है। इंडिगोफेरा की पत्तियों से नीला रंग, सूखे अनार के छिलकों और हल्दी से पीला रंग बनाया जाता है। प्रकृति द्वारा प्राप्त ये रंग कपड़े पर एक खूबसूरत प्रभाव छोड़कर मिट्टी में मिल जाते हैं, जिससे प्रकृति को कोई नुकसान नहीं पहुंचता।

नवाचार के माध्यम से परम्परा और आधुनिकता का समन्वय

वर्तमान युग विज्ञान और तकनीक का है, जहां आधुनिकता के साथ कदम मिलकर चलना आवश्यक हो गया है। परम्परा हमारी संस्कृति की पहचान और जीवन मूल्यों की नींव है। परम्परा और आधुनिकता, दोनों ही समाज के विकास के महत्वपूर्ण अंग हैं। परम्परा हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखती है, और आधुनिकता हमें भविष्य की ओर अग्रसर करती है। नवाचार, इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है। नवाचार सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में सहायक होता है, और साथ ही इन्हें समयानुकूल बनाकर नए संदर्भ में प्रस्तुत करता है। नवाचार के माध्यम से परम्परा की प्रासंगिकता बनी रहती है, और यह युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़े रखता है। परम्परा और आधुनिकता में टकराव न हो, बल्कि समन्वय बना रहे, यही आज की आवश्यकता है। परम्परागत हस्तकला और आधुनिक डिजाइन को मिलाकर ही नए बाजार को स्थापित किया जा सकता है। इसका यह अर्थ है, कि पारंपरिक कलाओं को आधुनिक ग्राहकों की पसंद और जीवनशैली के अनुसार ढालना। पारंपरिक बगरू छपाई में नवाचार के माध्यम से नए प्रयोग किए जा रहे हैं, जिससे इस हाथ की छपाई को आधुनिक समय के अनुरूप बनाया जा रहा है। बगरू छपाई में नवाचार के माध्यम से यह पारंपरिक कला आधुनिक जीवनशैली से जुड़ रही है। इससे न केवल आर्टिजन को रोजगार मिल रहा है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक पहचान को विश्व स्तर पर एक नई पहचान मिल रही है। जब परंपरा में नवाचार का रंग मिल जाता है, तब वह समय के साथ और अधिक प्रासंगिक बन जाती है। यह बगरू छपाई को समय के अनुसार ढालने की प्रक्रिया है। इसके माध्यम से ही बगरू छपाई में परम्परा और आधुनिकता का सुन्दर सामंजस्य संभव हो पाया है।

समकालीन परिधानों में नवाचार और फैशन ब्रांड्स

भारत की परंपरागत हस्तकला सदियों पुरानी सांस्कृतिक धरोहर है। यह न केवल देश की पहचान है, बल्कि ग्रामीण और कारीगर समुदायों की आजीविका का प्रमुख स्रोत है। परन्तु बदलते समय में इन कलाओं की मांग घटने लगी है। ऐसे में आधुनिक डिजाइन और नवाचार के माध्यम से इन्हें नए बाजार से जोड़ना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। वर्तमान समय में पारंपरिक परिधान और उनकी डिजाइन में कुछ परिवर्तन करके कई फैशन ब्रांड्स इन्हें इंडो

वेस्टर्न, समकालीन और पारम्परिक परिधानों में पुनः प्रस्तुत कर रहे हैं। भारतीय परिधानों में नवाचार के विभिन्न क्षेत्र हो सकते हैं। डिजाइन और रूपांकन किसी भी वस्त्र का एक अभिन्न भाग होते हैं, जो वस्त्रों को एक पैटर्न प्रदान करते हैं। पारंपरिक रूपांकनों को वर्तमान समय के डिजाइन के साथ सम्मिलित करके नए रूपांकनों को विकसित किया जा रहा है, जो वस्त्र उद्योग में नई पहल है। इसी प्रकार परिधान में तकनीक, रंगों, उत्पादों में विविधता और मार्केटिंग के माध्यम से नवाचार किया जा रहा है। बगरू में छपाई का सारा काम हाथ से किया जाता है। प्राकृतिक रंगों को बनाने से लेकर कपड़े पर छापने और रंग को कपड़े पर पक्का करने तक आर्टिजन को कठिन परिश्रम करना पड़ता है। तब कहीं एक कपड़ा सुन्दर डिजाइन और रंग में तैयार हो पाता है। इतने कठिन परिश्रम के बाद वहां के आर्टिजन की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा है। छपाई की नई तकनीक के आने से कपड़े पर छपाई कम समय में और कम खर्च में हो जाती है, जिससे अब पारंपरिक छपाई पर इसका सीधा असर दिखाई देता है। आर्थिक परिस्थितियों से जूझते हुए भी यह छीपा समुदाय आज के नए युग में भी ऐतिहासिक धरोहर के साथ संघर्ष कर रहा है।

कुछ प्रमुख ब्रांड्स और नवाचार करने वाले संगठन वर्तमान में इसके लिए पहल कर रहे हैं। बगरू छपाई की पारंपरिक विधियों के माध्यम से समकालीन भारतीय परिधानों को आधुनिक फैशन के चलन के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। जैसे- Anokhi, itokri, Cottons Jaipur, Fabindia, Rangsutra, Farida Gupta. इनके अलावा कुछ ऐसी संस्थाएं भी हैं, जो भारतीय परिधान को लेकर नवाचार को बढ़ावा दे रही हैं, जैसे Dastkar, Rajsthan Studio. समकालीन परिधानों में नवाचार और फैशन ब्रांड्स ने भारतीय परिधान उद्योग को एक नई दिशा दी है। ये दोनों मिलकर परम्परा और आधुनिकता का संतुलन बनाते हैं, जिससे भारत का फैशन जगत वैश्विक स्तर पर पहचाना जा रहा है। नवाचारों के माध्यम से न केवल फैशन आकर्षक और आरामदायक बना है, बल्कि इसे पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक जागरूकता के साथ भी जोड़ दिया गया है। साथ ही वर्तमान समय में छीपा समुदाय के सामने जो बगरू छपाई को लेकर जो समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, उनका निराकरण भी नवाचार के माध्यम से आसानी से किया जाना संभव हो पाया है।

चित्र 1 Anokhi Shop

निष्कर्ष

बगरू छपाई भारतीय हस्तशिल्प की एक अनमोल सांस्कृतिक विरासत है, जो राजस्थान में प्राकृतिक रंगाई और ब्लॉक प्रिंटिंग तकनीक के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यह छपाई की कला पारंपरिक सौंदर्य और स्थानीय जीवनशैली का प्रतिबिम्ब है, और पर्यावरण के अनुकूल प्राकृतिक रंगों के माध्यम से एक टिकाऊ फैशन की दिशा में अग्रसर है। समकालीन भारतीय परिधान में तकनीकी उन्नयन के कारण बगरू छपाई ने प्रसिद्धि हासिल की है। आधुनिक समय में विभिन्न फैशन ब्रांड्स डिजाइन, रंग, सामग्री और पैटर्न में बदलाव करके युवा पीढ़ी को आकर्षित कर भारतीय परिधान उद्योग को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। बगरू छपाई करने वाले छीपा समुदाय को भी नवाचार के माध्यम से नया काम और उनके काम का बेहतर मेहनताना मिल रहा है।

संदर्भ सूची

1. Renu, Yadav, S., & Neelam M Rose. (2024). Preserving Heritage: the timeless art of Bagru printing in Rajasthan. Vigyan Varta, 5(6), https://www.vigyanvarta.in/adminpanel/upload_doc/VV_0624_40.pdf

2. Bagru Prints | Isha Sadhguru. (2022, June 18). 180-184. https://isha.sadhguru.org/en/outreach/save-the-weave/indian-weaves/bagru-prints
3. Raj, S. (n.d.). 'Bagru' – a traditional printing technique of Rajasthan. www.fibre2fashion.com. https://images.fibre2fashion.com/ArticleResources/PdfFiles/62/6198.pdf
4. Gaatha_Home. (2022, February 21). Amidst rays of hope and sunlight (Bagru). Story of Indian Crafts and Craftsmen. https://gaatha.com/bhagru-block-print-rajasthan/
5. Gaatha. (2021, July 31). Block Printing~Bagru - Craft Archive | Research on Indian Handicrafts & handloom. Craft Archive | Research on Indian Handicrafts & Handloom - Indian Craft Online. https://gaatha.org/Craft-of-India/block-printingbagru/
6. Bagru - Hand Block Printing Workshops - Jai Texart, Jaipur. (n.d.). https://bagru.in/
7. Derawala, L. C. (n.d.). LAL CHAND DERAWALA. LAL CHAND DERAWALA. https://lcderawala.in/history
8. आरएएस. (2019, November 12). राजस्थानी हस्तशिल्प. राज आरएएस. https://hindi.rajras.in/rajasthani-hastshilp/

चित्र सूची

1. https://www.anokhi.com/jodhpur/